सह़ाबियात के आ'ला औसाफ़ सिलसिला नम्बर 1

SAHABIYAT AUR PARDA (HINDI)

सह़ाबियात और पर्दा

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)
فیضانِ صحابیات وصالحات

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! *हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह रिसाला **"सहाबियात और पर्दा"** उर्दू ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **हिन्दी रस्मुल ख़त** करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (*Translation*) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (*Transliteration*) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए *Sms*, *E-mail* या *Whats App* ब शुमूल सफ़्हा व सत़्र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये। **मदनी इल्तिजा :** इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सहाबियात और पर्दा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **इमामे हुसैन की करामात** में नक़्ल फ़रमाते हैं : बे चैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं : **कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है ?**[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शर्मो ह़या की पैकर बा पर्दा सह़ाबिया का सफ़रे मदीना

मुसलमानों के ह़लीफ़ क़बीले बनी ख़ुज़ाआ़ का एक शख़्स अपने ऊंट पर सुवार कहीं जा रहा था कि वोह मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से थोड़ी दूर शर्मो ह़या की पैकर एक बा पर्दा ख़ातून को वीराने में पैदल

[1] .....کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السادس.....الخ، المجلد الاول، ۱/۲۵۰، حدیث: ۲۱۷٤

www.dawateislami.net

सफ़र करते देख कर हैरान रह गया। उसे शक गुज़रा कि यक़ीनन येह इफ़्फ़त मआब ख़ातून उन्ही मुसलमानों में से होगी जिन्हें अह्ले मक्का ने मदीना जाने से रोक रखा है। तफ़्तीशे हाल पर जब उस ख़ातून ने भी उस शख़्स के सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हलीफ़ क़बीले बनी ख़ुज़ाआ का फ़र्द होने की वज्ह से येह तस्लीम कर लिया कि वोह वाक़ेई सूए मदीना रवां है तो उस शख़्स के दिल ने येह गवारा न किया कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उस आशिक़ा को यूं तन्हा सफ़र करने दे। चुनान्चे, उस ने अपना सफ़र मौक़ूफ़ किया और अपना ऊंट उस बा पर्दा ख़ातून को पेश कर के मदीना पहुंचाने का अज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) कर लिया और यूं शर्मो हया की पैकर उस बा पर्दा ख़ातून ने भी इसे ग़ैबी इमदाद समझ कर क़बूल कर लिया।

यूं एक ऐसा ख़ामोश सफ़र शुरूअ हुवा जिस ने तारीख़ के औराक़ में वोह सुनहरी यादें छोड़ीं जिस पर आज भी बिलाशुबा रश्क किया जा सकता है। इश्क़े सरकार में मुज़्तरिब हो कर तने तन्हा सूए मदीना रख़्ते सफ़र बांधने वाली उस बा पर्दा ख़ातून की हिम्मत के क्या कहने ! वोह ख़ुद अपने इस सफ़र की दास्तान कुछ यूं सुनाती हैं कि दौराने सफ़र उस शख़्स ने रास्ते भर मुझ से कोई कलाम न किया, बल्कि जब आराम का वक़्त होता तो वोह ऊंट को बिठा कर दूर हट जाता और मैं कजावे से निकल कर किसी सायादार दरख़्त के नीचे हो जाती, फिर वोह ऊंट को मुझ से दूर किसी और दरख़्त के नीचे बांध देता और ख़ुद भी वहीं कहीं आराम कर लेता और जब

www.dawateislami.net

दोबारा सफ़र का वक़्त होता तो ऊंट पर कजावा रख कर उसे मेरे पास छोड़ कर फिर दूर हट जाता, मेरे सुवार होने के बा'द ख़ामोशी से आ कर नकील पकड़ता और सूए मदीना चल पड़ता। यूं दौराने सफ़र भी मैं निक़ाब में रही और पर्दे के एहतिमाम में मुझे कोई दुश्वारी पेश न आई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए उस ने बहुत अच्छे किरदार का मुज़ाहरा किया।

आख़िर जब मैं मदीना पहुंची तो सब से पहले उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के काशानए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुई। मैं उस वक़्त भी निक़ाब में थी जिस की वज्ह से सय्यिदा उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुझे न पहचाना, लिहाज़ा मैं ने चेहरे से निक़ाब हटा कर उन्हें अपना तआ़रुफ़ करवाया और जब बताया कि मैं ने तन्हा हिजरत की है तो वोह दंग रह गईं और ह़ैरत से पूछने लगीं कि क्या वाक़ेई ! तुम ने तन्हा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ख़ातिर हिजरत की है ? मैं ने इक़रार किया, अभी हम बातें ही कर रही थीं कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ ले आए और तमाम सूरते ह़ाल जान कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अह्लन व सह्लन के दिल आवेज़ अल्फ़ाज़ से मुझे ख़ुश आमदीद कहा और मेरे इस त़रह़ इस्लाम की ख़ातिर हिजरत करने को सराहा।[1]

[1] .....صفة الصفوة، ذكر المصطفيات من طبقات الصحابيات، ام كلثوم بنت عقبه بن معيط، المجلد الاول، ۲/ ۳۹

www.dawateislami.net

हालते सफ़र में पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मक्कए मुकर्रमा से मदीना शरीफ़ हिजरत फ़रमाने के बा'द जो उ़श्शाक़े रसूल किसी वज्ह से हिजरत न कर सके वोह दीदारे रसूल से महरूम होने की वज्ह से हर दम बे चैन रहते और जब भी उन में से किसी को मौक़अ़ मुयस्सर आता वोह सूए ह़बीब रवाना हो जाता। इ़श्क़े सरकार में तड़पने वाले उन लोगों में से एक येह बा पर्दा सह़ाबिया भी थीं जो कि शर्मो ह़या के पैकर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मां जाई बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا थीं।

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इस क़दर त़वील सफ़र में जिस त़रह़ शर्मो ह़या की लाज रखी और पर्दे का एहतिमाम किया वोह आप ही का ख़ास्सा था और इस का इन्आ़म बारगाहे नबुव्वत से येह मिला कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया बल्कि अपने आज़ाद कर्दा ग़ुलाम और मुंह बोले बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इन की शादी ख़ाना आबादी फ़रमा कर उन्हें अपनी अमान अ़त़ा फ़रमाई।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! मिल कर अ़ह्द करती हैं कि सफ़र में हों या ह़ज़र में, हमेशा पर्दे का एहतिमाम करेंगी ताकि हमें भी सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा और अमान नसीब हो।

www.dawateislami.net

क्या औ़रत का तन्हा सफ़र करना जाइज़ है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत का जो सफ़र तन्हा और बिग़ैर मह़रम के किया था वोह शरीअ़त के ऐ़न मुत़ाबिक़ था, जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : (शरई सफ़र की मिक़्दार औ़रत के तन्हा सफ़र करने की) मुमानअ़त के हुक्म से मुहाजिरा और कुफ़्फ़ार की क़ैद से छूटने वाली औ़रत ख़ारिज है कि येह दोनों औ़रतें बिग़ैर मह़रम अकेली ही दारुस्सलाम की त़रफ़ सफ़र कर सकती हैं बल्कि येह सफ़र उन पर वाजिब है ।[1]

लिहाज़ा इस वाक़िए़ से कोई इस्लामी बहन येह न समझ ले कि अकेली औ़रत का इस क़दर दूर दराज़ का सफ़र करना जाइज़ है, क्यूंकि बिग़ैर शौहर या मह़रम के औ़रत का तीन दिन की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ किसी जगह जाना ह़राम है । यहां तक कि अगर औ़रत के पास सफ़रे ह़ज के अस्बाब हैं मगर शौहर या कोई क़ाबिले इत़्मीनान मह़रम साथ नहीं तो ह़ज के लिये भी नहीं जा सकती । अगर गई तो गुनाहगार होगी अगर्चे फ़र्ज़ ह़ज अदा हो जाएगा ।[2] जैसा कि बहारे शरीअ़त में है कि औ़रत को बिग़ैर मह़रम के तीन दिन या ज़ियादा की राह जाना, नाजाइज़ है बल्कि एक दिन की राह जाना भी । नाबालिग़ बच्चा या मा'तूह (कम अ़क़्ल) के साथ

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, ह़ज का बयान, पहली फ़स्ल, 4 / 90

2 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 165

www.dawateislami.net

भी सफ़र नहीं कर सकती, हमराही में बालिग़ महरम या शौहर का होना ज़रूरी है। महरम के लिये ज़रूर है कि सख़्त फ़ासिक़ बे बाक ग़ैर मामून न हो।[1]

पर्दा व हिजाब क्या है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हिजाब अरबी ज़बान के लफ़्ज़ हजबुन से निकला है जिस का मतलब है किसी को किसी शै तक रसाई हासिल करने से रोकना और हिजाब के मुतअल्लिक़ अल्लामा शरीफ़ जुरजानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی **किताबुत्ता'रीफ़ात** में फ़रमाते हैं कि **हिजाब से मुराद हर वोह शै है जो आप से आप का मक़्सूद छुपा दे।**[2] या'नी आप एक शै को देखना चाहें मगर वोह शै किसी आड़ या पर्दे में हो तो उस आड़ या पर्दे को हिजाब कहते हैं। हिजाब का येह मफ़्हूम कुरआने करीम में कई मक़ामात पर मज़कूर है, जैसा कि पारह 23 सूरए ص की आयत नम्बर 32 में इरशाद होता है :

حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿۳۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए।*

नीज़ औरतों के हिजाब से क्या मुराद है इस के मुतअल्लिक़ हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی फ़रमाते हैं : औरतों के हिजाब से मुराद येह है (या'नी वोह इस तरह पर्दा करें) की मर्द उन्हें किसी तरह देख न सकें।[3]

1 .....बहारे शरीअत, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, 1 / 752

2 ..... كتاب التعريفات، حرف الحاء، ص ١٤٥

3 ..... فتح الباری، کتاب التفسیر، باب قوله (وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ)، ٨/٥٨١، تحت الحدیث: ٤٧٥٠

www.dawateislami.net

औ़रत किसे कहते हैं ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औ़रत का मत़लब है : مَایُعَارُ فِی اِظْھَارِہٖ (या'नी जिस्म का वोह हिस्सा) जिस का ज़ाहिर होना क़ाबिले आ़र व शर्म हो ।[1] एक रिवायत में है : اَلْمَرْاَۃُ عَوْرَۃٌ औ़रत औ़रत है ।[2] मत़लब येह है कि औ़रत मर्दे अजनबी के लिये सर से पाउं तक लाइ़क़े पर्दा (या'नी छुपाने की चीज़) है[3] और छुपाया उसी चीज़ को जाता है जिस को ग़ैर की नज़रों से बचाना मक़्सूद होता है और ग़ैर से मुराद कौन है ? इस के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है : औ़रत पर्दे में रहने की चीज़ है, فَاِذَا خَرَجَتْ اِسْتَشْرَفَھَا الشَّیْطَانُ या'नी जब वोह बाहर निकलती है तो शैत़ान उसे निगाह उठा उठा कर देखता है ।[4]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि اِسْتِشْرَاف के मा'ना हैं : "किसी चीज़ को बग़ौर देखना" या इस के मा'ना हैं : "लोगों की निगाह में अच्छा कर देना ताकि लोग उसे बग़ौर देखें" या'नी औ़रत जब बे पर्दा होती है तो शैत़ान लोगों की निगाह में उसे भली कर देता है कि

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, पर्दे के अह़काम, दूसरी फ़स्ल, 5 / 16

2 ..... ترمذی، کتاب الرضاع، ۱۸-باب، ص۳۰٤، حدیث: ۱۱۷۳

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, पर्दे के अह़काम, पहली फ़स्ल, 5 / 13

4 ..... ترمذی، کتاب الرضاع، ۱۸-باب، ص۳۰٤، حدیث: ۱۱۷۳

www.dawateislami.net

वोह ख़्वाह म ख़्वाह उसे तकते हैं, मिस्ल मश्हूर है कि **पराई औ़रत और अपनी औलाद अच्छी मा'लूम होती है और पराया माल और अपनी अ़क़्ल ज़ियादा मा'लूम होते हैं ।**[1]

पर्दे का हुक्म कब नाज़िल हुवा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पर्दे का हुक्म कब नाज़िल हुवा ? इस के मुतअ़ल्लिक़ शैख़े कबीर, अ़ल्लामा शहीर ह़ज़रते सय्यिदुना मख़्दूम मुह़म्मद हाशिम ठठवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى अपनी किताब सीरते सय्यिदुल अम्बिया में फ़रमाते हैं : इसी साल (या'नी 4 हिजरी) ज़ी क़ा'दा के महीने में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की काशानए नबुव्वत में रुख़्सती के दिन मुसलमान औ़रतों के लिये पर्दे का हुक्म नाज़िल हुवा । बा'ज़ उ़लमाए किराम का कहना है कि येह हुक्म 2 हिजरी को नाज़िल हुवा, (मगर) क़ौले अव्वल (या'नी पहला क़ौल ही) राजेह़ है ।[2] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی भी **फ़त्हुल बारी** में इस हुक्म के नाज़िल होने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अक़्वाल ज़िक्र कर के एक क़ौल को तरजीह़ देते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : इन तमाम अक़्वाल में सब से ज़ियादा मश्हूर क़ौल येही है कि पर्दे का हुक्म 4 हिजरी में नाज़िल हुवा ।[3]

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, पर्दे के अह़काम, दूसरी फ़स्ल, 5 / 17

2 .....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, ह़िस्सा दुवुम, बाब सिवुम, फ़स्ल चहारुम, 4 हिजरी के वाक़िआ़त, स. 351

३ ..... فتح الباری، کتاب المغازی، باب غزوۃ احمار، ۷/۵۳۷، تحت الحدیث: ۴۱۴۰

www.dawateislami.net

पर्दा सिर्फ़ औ़रतों के लिये ही क्यूं ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुवाल पैदा होता है कि सिर्फ़ औ़रतों को ही पर्दे व हि़जाब का हुक्म क्यूं दिया गया ? चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 170 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब इस्लामी ज़िन्दगी सफ़ह़ा 105 पर औ़रतों के पर्दा करने के पांच अस्बाब कुछ यूं तह़रीर हैं :

﴾1﴿ ☞ औ़रत घर की दौलत है और दौलत को छुपा कर घर में रखा जाता है, हर एक को दिखाने से ख़त़रा है कि कोई चोरी कर ले। इसी त़रह़ औ़रत को छुपाना और ग़ैरों को न दिखाना ज़रूरी है।

﴾2﴿ ☞ औ़रत घर में ऐसी है जैसे चमन में फूल और फूल चमन में ही हरा भरा रहता है, अगर तोड़ कर बाहर लाया गया तो मुरझा जाएगा। इसी त़रह़ औ़रत का चमन उस का घर और उस के बाल बच्चे हैं, इस को बिला वज्ह बाहर न लाओ वरना मुरझा जाएगी। औ़रत का दिल निहायत नाज़ुक है, बहुत जल्द हर त़रह़ का असर क़बूल कर लेता है, इस लिये इस को कच्ची शीशियां फ़रमाया गया।

﴾3﴿ ☞ हमारे यहां भी औ़रत को सिन्फ़े नाज़ुक कहते हैं और नाज़ुक चीज़ों को पथ्थरों से दूर रखते हैं कि टूट न जाएं। ग़ैरों की निगाहें इस के लिये मज़बूत़ पथ्थर हैं, इस लिये इस को ग़ैरों से बचाओ।

www.dawateislami.net

﴾4﴿ ☞ औ़रत अपने शौहर और अपने बाप दादा बल्कि सारे ख़ानदान की इ़ज़्ज़त और आबरू है और इस की मिसाल सफ़ेद कपड़े की सी है, सफ़ेद कपड़े पर मा'मूली सा दाग़ धब्बा दूर से चमकता है और ग़ैरों की निगाहें इस के लिये एक बदनुमा दाग़ हैं, इस लिये इस को इन धब्बों से दूर रखो।

﴾5﴿ ☞ औ़रत की सब से बड़ी ता'रीफ़ येह है कि उस की निगाह अपने शौहर के सिवा किसी पर न हो, इस लिये क़ुरआने करीम ने हूरों की ता'रीफ़ में फ़रमाया : قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ[1] (پ۲۷،الرحمٰن:۵۶) अगर उस की निगाह में चंद मर्द आ गए तो यूं समझो कि औ़रत अपने जोहर खो चुकी, फिर उस का दिल अपने घरबार में न लगेगा जिस से येह घर आख़िर तबाह हो जाएगा।

क्या औ़रतों का घरों में रहना ज़ुल्म है ?

बा'ज़ लोग ए'तिराज़ करते हैं कि औ़रतों का घरों में क़ैद रखना उन पर ज़ुल्म है जब हम बाहर की हवा खाते हैं तो उन को इस ने'मत से क्यूं महरूम रखा जाए ? तो इस का जवाब येह है कि घर औ़रत के लिये क़ैदख़ाना नहीं बल्कि उस का चमन है घर के कारोबार और अपने बाल बच्चों को देख कर वोह ऐसी ख़ुश रहती हैं जैसे चमन में बुलबुल। घर में रखना उस पर ज़ुल्म नहीं, बल्कि इ़ज़्ज़तो इ़स्मत की हिफ़ाज़त है इस को

[1].....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** शौहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं।

www.dawateislami.net

कुदरत ने इसी लिये बनाया है। बकरी इसी लिये है कि रात को घर रखी जाए और शेर, चीता और मुहाफ़िज़ कुत्ता इस लिये है कि उन को आज़ाद फिराया जाए, अगर बकरी को आज़ाद किया तो उस की जान ख़तरे में है उस को शिकारी जानवर फाड़ डालेंगे।[1]

पर्दा व हिजाब गोया इस्लामी शिआ़र है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पर्दा व हिजाब गोया इस्लामी शिआ़र की हैसिय्यत रखता है, क्यूंकि इस्लाम से क़ब्ल औरत बे पर्दा थी और इस्लाम ने उसे पर्दा व हिजाब के ज़ेवर से आरास्ता कर के अ़ज़मत व किरदार की बुलन्दी अ़ता फ़रमाई, जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى

(پ۲۲،الاحزاب:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

ख़लीफ़ए **आ'ला ह़ज़रत** सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयते मुबारका के तह़्त **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं : अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औरतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व महासिन (या'नी बनाव सिंघार और जिस्म की ख़ूबियां मसलन सीने के उभार वग़ैरा) का इज़हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें।

1.....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 106 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें।[1] अफ़्सोस ! मौजूदा दौर में भी ज़मानए जाहिलिय्यत वाली बे पर्दगी पाई जा रही है। यक़ीनन जैसे उस ज़माने में पर्दा ज़रूरी था वैसा ही अब भी है।

अह़्दे रिसालत में ह़िजाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लाम ने औ़रत को पर्दे व ह़िजाब की सूरत में जो अ़ज़्मत व सर बुलन्दी अ़त़ा की, अह़्दे रिसालत की बुलन्द हिम्मत औ़रतों ने उसे इस क़दर अपनाया कि ह़िजाब आज़ाद मुसलमान औ़रत की अ़लामत बन गया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर और मदीनए मुनव्वरा (زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا) के दरमियान तीन दिन क़ियाम फ़रमाया, इसी दौरान ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपने ह़रम में दाख़िल फ़रमाया, फिर दौराने सफ़र आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की दा'वते वलीमा की। उस में रोटी और गोश्त का एहतिमाम न था बल्कि आप ने दस्तर ख़्वान बिछाने का हुक्म दिया और उस पर खजूरें, पनीर और घी रखा गया। येही सब कुछ वलीमा था, लेकिन ता ह़ाल सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर येह वाज़ेह़ न हुवा था कि ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ौजिय्यत में लिया है या कि कनीज़ बनाया है (क्यूंकि येह ख़ैबर की जंगी क़ैदियों में

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़्तुल आयत : 33, स. 780

www.dawateislami.net

शामिल थीं) उन्हों ने अपनी इस उल्झन को ह़ल करने के लिये तै़ किया कि अगर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन को पर्दा कराते हैं तो समझो कि ज़ौजिय्यत में लिया है और अगर ह़िजाब (या'नी पर्दा) न कराया तो समझो कनीज़ बनाया है। जब क़ाफ़िले ने कूच किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने पीछे ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की जगह बनाई और इन के और लोगों के दरमियान पर्दा तान दिया।[1]

पर्दा व ह़िजाब के दरजात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पर्दा व ह़िजाब के कुछ दरजात हैं। चुनान्चे,

पहला दर्जा

औ़रत ख़ुद को घर की चार दीवारी और पर्दे का इस त़रह़ पाबन्द बना ले कि किसी ग़ैर मर्द की निगाह इस पर न पड़े, या'नी कोई ग़ैर मह़रम इस के जिस्म को तो कुजा इस के लिबास तक को न देख पाए। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى

(پ۲۲،الاحزاب:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

इसी त़रह़ एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

[1] .....بخاری، کتاب النکاح، باب البناء فی السفر، ص۱۳۲۷، حدیث: ۵۱۰۹

www.dawateislami.net

وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ (پ۲۲،الاحزاب:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम उन से बरतने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो।

येह आयते मुबारका अगर्चे उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की शान में नाज़िल हुई जैसा कि इस का शाने नुज़ूल बयान करते हुवे इमाम बैज़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे नबुव्वत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप की ख़िदमत में नेक भी ह़ाज़िर होते हैं और बद भी, लिहाज़ा उम्महातुल मोमिनीन को पर्दे का हुक्म इरशाद फ़रमाइये। चुनान्चे, येह आयते मुबारका नाज़िल हुई।(1) बहर ह़ाल सबब कुछ भी हो पर्दे का हुक्म नाज़िल होने के बा'द जिन सहाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ ने पर्दे के इस पहले दर्जे पर अ़मल करते हुवे ख़ुद को घर की चार दीवारी तक मह़दूद कर लिया उन में से दो की मिसालें पेशे ख़िदमत हैं :

घर से जनाज़ा ही निकला

एक बार उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से अ़र्ज़ की गई : आप को क्या हो गया है कि आप बाक़ी अज़्वाज की त़रह़ ह़ज करती हैं न उ़मरह ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : मैं ने ह़ज व उ़मरह कर लिया है, चूंकि मेरे रब ने मुझे घर में रहने का हुक्म फ़रमाया है।

1 .... بیضاوی،پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیة:۵۳، ۳/۲۳۷

www.dawateislami.net

लिहाज़ा ख़ुदा की क़सम ! अब मैं पयामे अजल (मौत) आने तक घर से बाहर न निकलूंगी । रावी फ़रमाते हैं : **अल्लाह** की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا घर के दरवाज़े से बाहर न निकलीं यहां तक कि आप का जनाज़ा ही घर से निकाला गया ।[1]

जनाज़े पर किसी ग़ैर की नज़र न पड़े

इसी त़रह़ मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मौत के वक़्त येह वसिय्यत फ़रमाई कि बा'दे इन्तिक़ाल मुझे रात के वक़्त दफ़्न करना ताकि मेरे जनाज़े पर किसी ग़ैर की नज़र न पड़े ।[2]

چُو زَہرا باش از مخلوق رُو پوش

کہ در آغوش شبیر ے بہ بینی

या'नी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रह़ परहेज़गार व पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी औलाद देखो ।

क्या पर्दे के पहले दर्जे पर अ़मल सह़ाबियात ही का काम था ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पहले दर्जे के पर्दे व ह़िजाब पर अ़मल करने वाली सह़ाबियात की सीरते त़य्यिबा का येह रौशन पहलू आज के दौर की इस्लामी बहनों के लिये अ़मली नमूने की ह़ैसिय्यत रखता है और

[1] ..... در منثور، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۳۳، ۶/ ۵۹۹

[2] ..... مدارج النبوت، قسم پنجم، باب اوّل، ذکر وفات فاطمہ زہرا، الجزء الثانی، ص ۴۶۱

www.dawateislami.net

अगर आप में से कोई येह समझे कि येह इन्तिहाई मुश्किल काम है और सिर्फ़ सहाबियात के ही बस का था, अब किसी के लिये इस त़रह़ के पर्दे का एहतिमाम करना मुमकिन नहीं तो जान लीजिये कि ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं, क्यूंकि तारीख़ में ऐसी रौशन ज़मीर व बा पर्दा सालिह़ात का तज़किरा भी मिलता है कि जिन के दामन के धागे पर भी किसी ग़ैर मह़रम की निगाह नहीं पड़ी। चुनान्चे,

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **अख़्बारुल अख़्यार** में फ़रमाते हैं कि एक मरतबा ख़ुश्क साली हुई, लोगों ने बहुत दुआएं कीं मगर बारिश न हुई, तो शैख़ निज़ामुद्दीन अबुल मुअय्यद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी वालिदए माजिदा के पाकीज़ा दामन का एक धागा अपने हाथ में लिया और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में यूं अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** ! येह उस ख़ातून के दामन का धागा है जिस पर कभी किसी ना मह़रम की नज़र न पड़ी, मौला इस के तुफ़ैल बाराने रह़मत (या'नी रह़मत की बारिश) नाज़िल फ़रमा। मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि अभी शैख़ निज़ामुद्दीन عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْمَتِین ने येह जुम्ला कहा ही था कि छमा छम बारिश बरसने लगी।[1]

बरसता नहीं देख कर अब्रे रह़मत

बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले[2]

[1] ..... اخبار الاخیار ذکر بعضے از نسائے صالحات، بی بی سارہ، ص ۲۹۴

[2].....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 158

www.dawateislami.net

दूसरा दर्जा

पर्दे का दूसरा दर्जा येह है कि अगर किसी मजबूरी के तह़्त घर की चार दीवारी में ख़ुद को पाबन्द न कर सकें और बाहर निकलना पड़े तो ख़ूब पर्दे का एहतिमाम कर के निकलें ताकि कोई आप को पहचान न पाए, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम नौ उ़म्र लड़कियों, ह़ैज़ वालियों और पर्दे वालियों को हुक्म दिया कि ईदैन पर (नमाज़ के लिये) घर से निकलें मगर ह़ैज़ वालियां नमाज़ में शामिल न हों, बल्कि भलाई के कामों और मुसलमानों की दुआ़ में शरीक हों। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से बा'ज़ के पास तो जिल्बाब (बुर्क़अ़ या बड़ी चादर) नहीं। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस की बहन उसे अपनी जिल्बाब (बड़ी चादर का कुछ ह़िस्सा) ओढ़ा ले।[1]

सह़ाबियात का ह़िजाब कैसा था ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा औ़रत को घर में ही रहना चाहिये और अगर कभी किसी शरई मजबूरी की वज्ह से घर से बाहर निकलना भी पड़े तो बिग़ैर पर्दे के बिल्कुल न निकले और पर्दा भी ऐसा कि जिस्म के किसी ह़िस्से पर किसी की निगाह न पड़े। चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब क़ुरआने मजीद की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

[1] .....مسلم، کتاب صلاۃ العیدین، باب ذکر اباحۃ.....الخ، ص۳۱۷، حدیث:۸۹۰

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ

(پ۲۲، الاحزاب:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ नबी अपनी बीबियों और साहिबज़ादियों और मुसलमानों की औरतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें।*

तो अन्सार की ख़वातीन सियाह चादर ओढ़ कर घरों से निकलतीं, उन को दूर से देख कर यूं लगता कि उन के सरों पर कव्वे बैठे हैं।[1]

घर से बाहर निकलने की एहतियातें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा अगर किसी वज्ह से घर से बाहर निकलना पड़े और शरीअ़त भी इस की इजाज़त देती हो तो घर से बाहर निकलते वक़्त ख़ूब ख़ूब पर्दे का एहतिमाम कर लीजिये। चुनान्चे, इस सिलसिले में इस्लामी बहनों को किन किन बातों का ख़याल रखना चाहिये ? इस के मुतअ़ल्लिक़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 400 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **पर्दे के बारे में सुवाल जवाब सफ़्हा 42** पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه एक सुवाल के जवाब में तह़रीर फ़रमाते हैं : शरई इजाज़त की सूरत में घर से निकलते वक़्त इस्लामी बहन

[1] .....ابو داود، کتاب اللباس، باب فی قوله یدنین علیهن...الخ، ص ٦٤٥، حدیث: ٤١٠١، مفهوماً

www.dawateislami.net

ग़ैर जाज़िबे नज़र कपड़े का ढीला ढाला मदनी बुर्क़अ़ ओढ़े, हाथों में दस्ताने और पाउं में जुर्राबें पहने । मगर दस्तानों और जुर्राबों का कपड़ा इतना बारीक न हो कि खाल की रंगत झलके। जहां कहीं ग़ैर मर्दों की नज़र पड़ने का इमकान हो वहां चेहरे से निक़ाब न उठाए मसलन अपने या किसी के घर की सीढ़ी और गली महल्ले वग़ैरा । नीचे की त़रफ़ से भी इस त़रह़ बुर्क़अ़ न उठाए कि बदन के रंग बिरंगे कपड़ों पर ग़ैर मर्दों की नज़र पड़े । वाज़ेह़ रहे कि औ़रत के सर से ले कर पाउं के गिट्टों के नीचे तक जिस्म का कोई ह़िस्सा भी मसलन सर के बाल या बाज़ू या कलाई या गला या पेट या पिन्डली वग़ैरा अजनबी मर्द (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो) पर बिला इजाज़ते शरई ज़ाहिर न हो बल्कि अगर लिबास ऐसा महीन या'नी पतला है जिस से बदन की रंगत झलके या ऐसा चुस्त है कि किसी उ़ज़्व की हैअत (या'नी शक्लो सूरत या उभार वग़ैरा) ज़ाहिर हो या दूपट्टा इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी बे पर्दगी है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो वज़्ए़ लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व त़रीक़ए पोशिश (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब

www.dawateislami.net

औरात में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या बाज़ू या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई हिस्सा खुला हो यूं तो सिवा ख़ास महारिम के जिन से निकाह हमेशा को हराम है किसी के सामने होना सख़्त हरामे क़तई है।[1]

ख़्वाह म ख़्वाह की उज़्र ख़्वाही से बचिये

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम से बा'ज़ वोह इस्लामी बहनें जिन्हें किसी मुआशरती मजबूरी की बिना पर घर से बाहर बिल ख़ुसूस किसी सफ़र पर निकलना पड़ता है तो पर्दे का एहतिमाम नहीं करतीं, बल्कि अपनी बे पर्दगी का उज़्र यूं बयान करती हैं कि हमारे लिये ऐसा मुमकिन नहीं। ऐसी तमाम इस्लामी बहनों की तरग़ीब के लिये हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हकीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दर्जे ज़ैल येह हिकायत ही काफ़ी है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि फ़त्हे मक्का के मौक़अ पर जब दुश्मने इस्लाम अबू जह्ल के बेटे हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हकीम बिन्ते हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस्लाम क़बूल किया तो बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इकरिमा (जो अभी तक मुसलमान नहीं हुवे थे) यमन की तरफ़ भाग गए हैं और वोह इस बात से ख़ौफ़ज़दा हैं कि आप उन्हें क़त्ल कर देंगे, लिहाज़ा उन्हें

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 217

www.dawateislami.net

अमान अ़ता फ़रमा दीजिये। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त क़बूल करते हुवे सय्यिदुना इकरिमा को अमान दे दी। फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़कीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इकरिमा की तलाश में बा पर्दा निकल पड़ीं और आख़िर तिहामा के साह़िल पर जा पहुंचीं। उधर इकरिमा भी उसी साह़िल पर पहुंच कर कश्ती में सुवार हुवे तो कश्ती डग मगाने लगी, कश्ती बान ने कहा : इख़्लास से रब को याद करो। इकरिमा बोले : मैं कौन से अल्फ़ाज़ कहूं ? उस ने कहा : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहो ! तो बोले : इस कलिमे की वज्ह से तो मैं यहां तक पहुंचा हूं, लिहाज़ा तुम मुझे यहीं उतार दो। इतने में ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़कीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आप को देख लिया और उन से कहने लगीं : ऐ मेरे चचाज़ाद ! मैं एक ऐसी अ़ज़ीम हस्ती के पास से आ रही हूं जो बहुत ज़ियादा रह़म दिल और एह़सान फ़रमाने वाली है, वोह लोगों में सब से अफ़्ज़ल है। लिहाज़ा ख़ुद को हलाकत में मत डालिये ! आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के इसरार पर इकरिमा रुक गए, फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उन्हें अमान की यक़ीन दहानी कराते हुवे वापसी के लिये आमादा कर लिया, इस के बा'द दोनों मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا लौट आए और यूं ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़कीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने शौहर ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ बा पर्दा बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हुईं तो उन्हों ने अमान की यक़ीन दहानी के बा'द इस्लाम क़बूल कर लिया।[1]

[1] .....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عکرمه رضی الله عنه، المجلد السابع، ۱۳/ ۲۳۲، حدیث: ۳۷٤۱٦، مفهوماً

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस त़वील हि़कायत में हम सब के लिये बहुत से मदनी फूल मौजूद हैं और इन में सब से अहम मदनी फूल येह है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इस्लाम लाने के बा'द अपने शौहर को भी इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत के साए में लाने के लिये इस क़दर त़वील सफ़र किया मगर इस्लामी ता'लीमात पर अ़मल किसी भी मौक़अ़ पर तर्क न किया और पुर मशक़्क़त सफ़र में भी बा पर्दा रहीं। यूं बिल आख़िर उन की अपने घर को मदनी माह़ोल का गहवारा बनाने की मदनी सोच रंग लाई और उन के शौहर भी मदनी रंग में रंग गए।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने घरों को मदनी माह़ोल का गहवारा बनाने के लिये अगर आप को भी मुश्किलात का सामना करना पड़े तो ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की मुश्किलात को याद कर लिया कीजिये और याद रखिये कि इस राहे पुर ख़त़र पर चलना बड़े दिल गुर्दे का काम है। सच्ची वफ़ा येह है कि जब ख़ुद मदनी माह़ोल की बरकतों से फ़ैज़याब हों तो अपने दीगर घरवालों को भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की मुअ़त्त़र व मुश्कबार फ़ज़ा से दूर न रहने दीजिये।

तीसरा दर्जा

पर्दे का तीसरा और सब से कम तर दर्जा येह है कि औ़रत कम अज़ कम इस क़दर पर्दे का एहतिमाम ज़रूर करे कि जिस क़दर रब की

www.dawateislami.net

बारगाह में हाज़िर होते या'नी नमाज़ पढ़ते वक़्त लाज़िम है। मुराद येह है कि ना महरम के सामने कम अज़ कम सित्रे औरत का ख़याल ज़रूर रखे। चुनान्चे,

सित्रे औरत क्या है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **इस्लामी बहनों की नमाज़ (ह़नफ़ी)** सफ़ह़ा 91 पर है : इस्लामी बहन के लिये इन पांच आ'ज़ा : मुंह की टिकली, दोनों हथेलियां और दोनों पाउं के तल्वों के इ़लावा सारा जिस्म छुपाना लाज़िमी है।[1] अलबत्ता अगर दोनों हाथ (गिट्टों तक) पाउं (टख़्नों तक) मुकम्मल ज़ाहिर हों तो एक मुफ़्ता बेह क़ौल पर नमाज़ दुरुस्त है। अगर ऐसा बारीक कपड़ा पहना जिस से बदन का वोह ह़िस्सा जिस का नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है नज़र आए या जिल्द (या'नी चमड़ी) का रंग ज़ाहिर हो नमाज़ न होगी।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हाए अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज कल बारीक कपड़ों का रवाज बढ़ता जा रहा है, लिहाज़ा याद रखिये ! ऐसा कपड़ा पहनना जिस से सित्रे औरत न हो सके इ़लावा नमाज़ के भी ह़राम है।[3] जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना दह़िय्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते

[1] ..... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ص۵۸

[2] ..... فتاوٰی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الاول، ۱/۶۵

[3] .....बहारे शरीअ़त, नमाज़ की शर्तों का बयान, 1 / 480

www.dawateislami.net

हैं : एक मरतबा रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में सफ़ेद रंग के मिस्री कपड़े लाए गए जो कि क़दरे बारीक थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक कपड़ा मुझे अ़ता करते हुवे इरशाद फ़रमाया : इस के दो टुकड़े कर के एक से अपनी क़मीस बना लेना जब कि दूसरा अपनी बीवी को दे देना जिसे वोह अपना दूपट्टा बना ले। फ़रमाते हैं : जब मैं वापस मुड़ा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस बात की ताकीद फ़रमाई कि अपनी बीवी को येह हुक्म भी देना कि इस के नीचे दूसरा कपड़ा लगा ले ताकि बदन की सिफ़त मा'लूम न हो।(1)

नीज़ येह भी याद रखिये कि इतना दबीज़ (या'नी मोटा) कपड़ा जिस से बदन का रंग न चमकता हो मगर बदन से ऐसा चिपका हो कि देखने से उ़ज़्व की हैअत (ہَیْئَت या'नी शक्लो सूरत और गोलाई वग़ैरा) मा'लूम होती हो। ऐसे कपड़े से अगर्चे नमाज़ हो जाएगी मगर उस उ़ज़्व की त़रफ़ दूसरों को निगाह करना जाइज़ नहीं।(2) और ऐसा लिबास लोगों के सामने पहनना भी मन्अ़ है और औ़रतों के लिये बदरजए औला मुमानअ़त।(3) बा'ज़ वोह इस्लामी बहनें जो मलमल वग़ैरा की ऐसी बारीक चादर नमाज़ में ओढ़ती हैं जिस से बालों की सियाही (कालक) चमकती है या ऐसा लिबास पहनती हैं जिस से आ'ज़ा का रंग नज़र आता है जान लें कि ऐसे लिबास में भी नमाज़ नहीं होती।

[1]......ابو داود، کتاب اللباس، باب فی لبس القباطی للنساء، ص ٦٤٧، حدیث: ٤١١٦

[2]......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی النظر الی وجہ الامرد، ٢/١٠٣

[3].....बहारे शरीअ़त, नमाज़ की शर्तों का बयान, 1 / 480

www.dawateislami.net

पर्दा मगर किन से ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औ़रत का हर अजनबी बालिग़ मर्द से पर्दा है। जो महरम न हो वोह अजनबी होता है, महरम से मुराद वोह मर्द हैं जिन से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम हो। जब कि महारिम में तीन क़िस्म के अफ़राद दाख़िल हैं :

(1) ☞ नसब की बिना पर जिन से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम हो।

(2) ☞ रज़ाअ़त या'नी दूध के रिश्ते की बिना पर जिन से निकाह़ ह़राम हो।

(3) ☞ मुसाहरत या'नी सुसराली रिश्ते की वज्ह से जिन से निकाह़ ह़राम हो जैसे सुसर के लिये बहू या सास के लिये दामाद।

(पहली क़िस्म या'नी) नसबी महारिम के सिवा (बाक़ी) दोनों त़रह़ के महारिम से पर्दा वाजिब भी नहीं और मन्अ़ भी नहीं, ख़ुसूसन जब औ़रत जवान हो या फ़ितने का ख़ौफ़ हो तो पर्दा करे।[1] अलबत्ता ! सुसराल में देवर व जेठ वग़ैरा से किस त़रह़ पर्दा किया जाए ? सारा दिन पर्दे में रहना बहुत दुश्वार, घर के काम काज करते वक़्त कैसे अपने चेहरे को छुपाए ? चुनान्चे, इस सुवाल का जवाब देते हुवे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 400 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **पर्दे के बारे में सुवाल**

1.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 44, 45 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

जवाब सफ़हा 50 पर फ़रमाते हैं : घर में रहते हुवे भी बिल ख़ुसूस देवर व जेठ वग़ैरा के मुआ़मले में मोह़तात़ रहना होगा। सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : पैकरे शर्मो ह़या, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : औ़रतों के पास जाने से बचो। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! देवर के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ? फ़रमाया : देवर मौत है।[1] देवर का अपनी भाभी के सामने होना गोया मौत का सामना है कि यहां फ़ितने का अन्देशा ज़ियादा है। मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रत वक़ारे मिल्लत मौलाना वक़ारुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : इन रिश्तेदारों से जो ना मह़रम हैं (पर्दा बहुत दुश्वार हो तो इन से) चेहरा, हथेली, गिट्टे, क़दम और टख़्नों के इ़लावा सित्र (पर्दा) करना ज़रूरी है, ज़ीनत बनाव सिंघार भी उन के सामने ज़ाहिर न किया जाए।[2] बहर ह़ाल अगर एक घर में रहते हुवे औ़रत के लिये क़रीबी ना मह़रम रिश्तेदारों से पर्दा दुश्वार हो तो चेहरा खोलने की तो इजाज़त है मगर कपड़े हरगिज़ ऐसे बारीक न हों जिन से बदन या सर के बाल वग़ैरा चमकें या ऐसे चुस्त न हों कि बदन के आ'ज़ा जिस्म की हैअत (ہَیْءَات, या'नी सूरत व गोलाई) और सीने का उभार वग़ैरा ज़ाहिर हो।[3]

[1]........ بخاری، کتاب النکاح، باب لایخلون رجل...الخ، ص ۱۳۴۴، حدیث: ۵۲۳۲

[2].....वक़ारुल फ़तावा, 3 / 151

[3].....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 50 ता 52 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

पर्दादार के लिये आज़माइश

आज कल पर्दा करने वालियों का मुल्लानी कह कर घर में मज़ाक़ उड़ाया जाता है, कभी (कोई इस्लामी बहन) औरतों की किसी तक़रीब में मदनी बुर्क़अ ओढ़ कर चली जाए तो !!! ❀☞ कोई कहती है : अरे ! येह क्या ओढ़ रखा है उतारो इस को ! ❀☞ कोई बोलती है : बस हमें मा'लूम हो गया है कि तुम बहुत पर्दादार हो अब छोड़ो भी येह पर्दा वर्दा ! ❀☞ कोई कहती है : दुन्या बहुत तरक़्क़ी कर चुकी है और तुम ने येह क्या दक़्यानूसी अन्दाज़ अपना रखा है ! वग़ैरा। इस त़रह़ की दिल दुखाने वाली बातों से शरई पर्दा करने वाली का दिल टूट फूट कर चिकना चूर हो जाता है। अगर्चे वाक़ेई येह ह़ालात निहायत ही नाज़ुक हैं और शरई पर्दा करने वाली इस्लामी बहन सख़्त आज़माइश में मुब्तला रहती है मगर इसे हिम्मत नहीं हारनी चाहिये। मज़ाक़ उड़ाने या ए'तिराज़ करने वालियों से ज़ोरदार बह़स शुरूअ़ कर देना या ग़ुस्से में आ कर लड़ पड़ना सख़्त नुक़्सान देह है कि इस त़रह़ मस्अला ह़ल होने के बजाए मज़ीद उलझ सकता है।

ऐसे मौक़अ़ पर येह याद कर के अपने दिल को तसल्ली देनी चाहिये कि जब तक ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आ़म ए'लाने नबुव्वत नहीं फ़रमाया था उस वक़्त तक कुफ़्फ़ारे बद अन्जाम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एह़तिराम की नज़र से देखते थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अमीन और सादिक़ के लक़ब से याद करते थे।

www.dawateislami.net

मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जूंही अ़लल ए'लान इस्लाम का डंका बजाना शुरूअ़ किया वोही कुफ़्फ़ारे बद अत़वार त़रह़ त़रह़ से सताने, मज़ाक़ उड़ाने और गालियां सुनाने लगे, सिर्फ़ येही नहीं बल्कि जान के दरपे हो गए, मगर क़ुरबान जाइये ! सरकारे नामदार, उम्मत के ग़म ख़्वार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कि आप ने बिल्कुल हिम्मत न हारी, हमेशा सब्र ही से काम लिया। अब इस्लामी बहन सब्र करते हुवे ग़ौर करे कि मैं जब तक फ़ेशनेबल और बे पर्दा थी मेरा कोई मज़ाक़ नहीं उड़ाता था, जूंही मैं ने शरई पर्दा अपनाया, सताई जाने लगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि मुझ से ज़ुल्म पर सब्र करने की सुन्नत अदा हो रही है। मदनी इल्तिजा है कि कैसा ही सदमा पहुंचे सब्र का दामन हाथ से मत छोड़िये, नीज़ बिला इजाज़ते शरई हरगिज़ ज़बान से कुछ मत बोलिये। ह़दीसे क़ुदसी में है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : **ऐ इब्ने आदम ! अगर तू अव्वल सदमे के वक़्त सब्र करे और सवाब का त़ालिब हो तो मैं तेरे लिये जन्नत के सिवा किसी सवाब पर राज़ी नहीं।**[1]

मरज़ या किसी मुसीबत में पर्दे का एहतिमाम करना कैसा?

अफ़्सोस ! आज कल बीमारी व मुसीबत पर सब्र का दामन थामे रहने के बजाए बे सब्री का मुज़ाहरा किया जाता है ह़ालांकि एक मुसलमान

[1] .....ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر علی المصیبة، ص۲۵۶، حدیث: ۱۵۹۷

पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 52 ता 55 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

के लिये बीमारी व मुसीबत बाइसे नुज़ूले रह़मत और गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है। जैसा कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मोमिन को जो थकावट, बीमारी, परेशानी, ख़ौफ़, रंज और ग़म पहुंचता है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के इ़वज़ इस के गुनाह मिटा देता है।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा किसी भी बीमारी या दुख तक्लीफ़ पर कभी वावेला करना चाहिये न आपे से बाहर होना चाहिये बल्कि हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दामने रह़मत से वाबस्ता रहना चाहिये, अगर्चे इस में कोई शक नहीं कि जुनून व मिर्गी वग़ैरा ऐसी मूज़ी बीमारियां और ह़द दरजा किसी क़रीबी अ़ज़ीज़ मसलन मां, बाप, बहन, भाई, शौहर या औलाद वग़ैरा के इस जहाने फ़ानी से कूच कर के हमेशा के लिये जुदा हो जाने का दुख ऐसी मुसीबतें हैं जो बन्दे को होश से बेगाना कर देती हैं और येह आ़म मुशाहदा है कि उस वक़्त अक्सर इस्लामी बहनें मुसीबत और दुख के आ़लम में पर्दे के एहतिमाम से ग़ाफ़िल हो कर बे पर्दगी का मुर्तकिब हो जाती हैं, मगर कुरबान जाएं सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के जज़्बए ईमानी पर ! जिन्हों ने राहे ख़ुदा में मसाइबो तकालीफ़ के पहाड़ों को भी ख़न्दा पेशानी से क़बूल किया लेकिन अह़कामाते इस्लाम का दामन कभी किसी ह़ाल में हाथ से न जाने दिया। चुनान्चे,

[1] ..... بخاری، کتاب المرضی، باب ماجاء فی کفارۃ المرض، ص ۱۴۳۱، حدیث: ۵۶۴۱

www.dawateislami.net

बेटा खोया है, ह़या नहीं

अबू दावूद शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बेटा जंग में शहीद हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये निक़ाब डाले बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुईं तो इस पर किसी ने ह़ैरत से कहा : इस वक़्त भी बा पर्दा हैं ! कहने लगीं : मैं ने बेटा ज़रूर खोया है, ह़या नहीं खोई।[1]

ह़ालते मरज़ में बे पर्दा हो जाने की फ़िक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबू रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने मुझ से फ़रमाया : मैं तुम्हें जन्नती औ़रत न दिखाऊं ? मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं। फ़रमाया : येह ह़बशी औ़रत (जन्नती है)। इस ने नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मिर्गी के मरज़ की वज्ह से मेरा सित्र (पर्दा) खुल जाता है आप मेरे लिये दुआ़ फ़रमाइये। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चाहो तो सब्र करो तुम्हारे लिये जन्नत है और अगर चाहो तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तुम्हारे लिये दुआ़ करूं कि वोह तुझे आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाए। इस ने अ़र्ज़ की : मैं सब्र

[1] .....ابو داود، کتاب الجهاد، باب فضل قتال.....الخ، ص۳۹۷، حدیث: ۲۴۸۸ ملتقطاً

www.dawateislami.net

करूंगी। फिर अ़र्ज़ की : दुआ़ कीजिये ब वक़्ते मिर्गी मेरा पर्दा न खुला करे। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के लिये दुआ़ फ़रमा दी।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पर्दे के बारे में मज़ीद जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब **पर्दे के बारे में सुवाल जवाब** का मुत़ालआ़ कीजिये। इस में पर्दे से मुतअ़ल्लिक़ बे शुमार मौज़ूआ़त पर मा'लूमात का एक ख़ज़ाना आप के हाथ लगेगा। जैसा कि औ़रत का किस किस से पर्दा है ? मर्द व औ़रत के सित्र की मिक़्दार क्या है ? औ़रत सुसराल में किस त़रह़ पर्दा करे ? घर में पर्दे का ज़ेह्न कैसे बनाए ? हुसूले ता'लीम वग़ैरा के सिलसिले में पर्दे के एहतिमाम की सूरत कैसे बनाई जाए ? वग़ैरा वग़ैरा। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से इस किताब को ख़रीद फ़रमा कर ख़ुद भी पढ़िये और ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से दूसरी इस्लामी बहनों को भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये।

पर्दे में एह़तियात़ की मिसालें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पर्दे के मज़्कूरा दरजात ही नहीं बल्कि सलफ़ सालिह़ात बिल ख़ुसूस सह़ाबियाते त़य्यिबात से इस सिलसिले में कई ऐसी एह़तियातें भी मन्क़ूल हैं जिन पर बिलाशुबा तारीख़े आ़लम अंगुश्त ब दन्दां (ह़ैरान) है। चुनान्चे, इस ह़वाले से ज़ैल में दो बातें पेशे ख़िदमत हैं :

[1] .....بخاری، کتاب المرضی، باب فضل من یصرع من الریح، ص۱۴۳۳، حدیث:۵۶۵۲

www.dawateislami.net

हालते एहराम में भी पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! एहराम में मुंह छुपाना औरत के लिये भी उसी तरह हराम है जैसा कि मर्द के लिये हराम है। मगर इस हवाले से सहाबियात की ज़िन्दगियों के जो सुनहरी गोशे तारीख़ में दर्ज हैं वोह अपनी मिसाल आप हैं। जैसा कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : क़ाफ़िले हमारे पास से गुज़रते जब कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एहराम बांधे हुवे थीं, जब वोह लोग हमारे सामने से गुज़रते तो हम में से हर एक अपनी जिल्बाब (बुर्क़अ़ नुमा बड़ी चादर) सर से नीचे लटका लेती (इस एहतियात से कि मुंह पर न लगे) और जब वोह आगे गुज़र जाते तो हटा देती।[1]

मा'लूम हुवा औरतों के लिये अगर्चे एहराम में मुंह छुपाना हराम है मगर अजनबी लोगों से इस तरह पर्दा करना कि वोह इन्हें देख न पाएं तक़्वा व तहारत की आ'ला मिसाल है। जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان ने **मिरआतुल मनाजीह** में उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस क़ौल की जो शर्ह बयान की है, अगर उसे सामने रख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस क़ौल को मुलाहज़ा किया जाए तो सूरत कुछ यूं बनेगी : गोया आप

[1] ..... ابو داود، کتاب المناسك، باب فی المحرمة تغطی وجهها، ص ۲۹۷، حدیث: ۱۸۳۳

www.dawateislami.net

ने येह फ़रमाया कि वैसे तो हम अपनी सहेलियों के साथ अपने चेहरे खुले रखती थीं मगर जब दीगर लोगों के क़ाफ़िले हम पर गुज़रते तो चूंकि उन में मर्द भी होते थे, इस लिये हम उन से पर्दा करने की कोशिश करती थीं, या'नी जब वोह हमारे सामने से गुज़रते तो हम में से हर एक अपने सर से चेहरे पर चादर डाल लेती मगर इस त़रह़ कि चादर का येह ह़िस्सा चेहरे से मस (या'नी टच) न करे बल्कि इस से अ़लाह़िदा रहे कि इस में पर्दा भी हो जाता और निक़ाब चेहरे से मस भी न होता। फिर जब वोह आगे बढ़ जाते तो हम मुंह से चादर हटा लेती थीं क्यूंकि अब कोई ना मह़रम मर्द न रहता था जिस से पर्दा हो।[1]

इसी ह़दीस की शर्ह़ में मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان येह भी फ़रमाते हैं कि इस ह़दीस से येह साबित नहीं होता कि वोह ह़ज़रात अपने मदीने वाले (या'नी अपने शहर के) मर्दों से पर्दा न करती थीं, जैसा कि बा'ज़ लोगों ने समझा, पर्दा हर उस मर्द से वाजिब है जिस से निकाह़ दुरुस्त हो, ख़्वाह मदीना (या'नी अपने शहर या गाऊं) का हो या बाहर का।[2]

1.....मिरआतुल मनाजीह़, बाब मह़रम किस चीज़ से बचे, दूसरी फ़स्ल, 4 / 188-189 बित़ग़य्युर

2.....المرجع السابق، ص۱۸۸

www.dawateislami.net

जहाने फ़ानी से कूच कर जाने वालों से पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हाए अफ़्सोस ! एक हम हैं कि आज के इस पुर फ़ितन और नफ़्सा नफ़्सी के दौर में जहां हर त़रफ़ इ़ज़्ज़तों के सौदागर मौजूद हैं हम से ज़िन्दा व ग़ैर महरम मर्दों से पर्दे का कमाह़क़्क़ुहू एहतिमाम मुमकिन नहीं रहा और एक सह़ाबियाते त़य्यिबात थीं जिन्हों ने इ़ज़्ज़तों के मुह़ाफ़िज़ों की मौजूदगी में ज़िन्दा लोग तो एक त़रफ़ जहाने फ़ानी से कूच कर जाने वालों से भी पर्दे का एहतिमाम कर के तारीख़ के सुनह्री औराक़ में रंग भर दिये। चुनान्चे,

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब मैं अपने उस घर में दाख़िल होती जिस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मेरे वालिद मदफ़ून हैं तो इस ख़याल से अपनी ओढ़नी न लेती कि यहां तो मेरे शौहर और वालिद हैं, मगर जब से उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां दफ़्न हुवे तो ख़ुदा की क़सम ! मैं उन से शर्म के बाइ़स बा पर्दा ह़ाज़िर होती हूं।[1]

शर्ह़े ह़दीस

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان **मिरआतुल मनाजीह़** जिल्द 2 सफ़ह़ा 527 पर इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी जब तक मेरे ह़ुजरे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र

[1] ..... مسند احمد، مسند عائشہ رضی اللہ عنہا، ۱۰/۴۵۷، حدیث: ۲۶۴۰۸

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मदफ़ून रहे तब तक तो मैं सर खोले या ढके हर त़रह़ हुजरे शरीफ़ में चली जाती थी क्यूंकि न ख़ावन्द से ह़िजाब होता है न वालिद से, (मगर) जब से ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मेरे हुजरे में दफ़्न हो गए तब से मैं बिग़ैर चादर ओढ़े और पर्दे का पूरा एहतिमाम किये बिग़ैर हुजरे शरीफ़ में न गई कि ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से शर्मो ह़या करती हूं।

इस ह़दीस से बहुत मसाइल मा'लूम हो सकते हैं : **एक** येह कि मय्यित का बा'दे वफ़ात भी एह़तिराम चाहिये। फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि मय्यित का ऐसा ही एह़तिराम करे जैसा कि उस की ज़िन्दगी में करता था। **दूसरे** येह कि बुज़ुर्गों की क़ुबूर का भी एह़तिराम और उन से भी शर्मो ह़या चाहिये। **तीसरे** येह कि मय्यित क़ब्र के अन्दर से बाहर वालों को देखता और उन्हें जानता पहचानता है। देखो ! ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) उन की वफ़ात के बा'द शर्मो ह़या फ़रमा रही हैं और अगर आप बाहर की कोई चीज़ न देखते तो इस ह़या फ़रमाने के क्या मा'ना ? **चौथे** येह कि क़ब्र की मिट्टी, तख़्ते वग़ैरा तो मय्यित की आंखों के लिये ह़िजाब नहीं बन सकते मगर ज़ाइर (या'नी ज़ियारत करने वाले) के जिस्म का लिबास उन के लिये आड़ है, लिहाज़ा मय्यित को ज़ाइर (ज़ियारत करने वाला) नंगा नहीं दिखाई देता वरना ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का चादर ओढ़ कर वहां जाने के क्या मा'ना थे ? येह क़ानूने क़ुदरत है। लिहाज़ा ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि जब ह़ज़रते

www.dawateislami.net

उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) क़ब्र के अन्दर से ज़ाइर को देख रहे हैं तो ज़ाइर के कपड़ों के अन्दर का जिस्म भी उन्हें नज़र आ रहा है।[1]

फ़रोग़ व हिफ़ाज़ते हिजाब में सहाबियात का किरदार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! सहाबियात पर्दे का किस क़दर एहतिमाम करती थीं और ऐसा क्यूं न होता कि येह वोह पाक हस्तियां थीं जिन्हों ने आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार से जो कुछ सीखा उस पर अ़मल पैरा होना न सिर्फ़ ख़ुद पर लाज़िम कर लिया बल्कि दूसरों के लिये भी लाज़िम जाना ताकि उन की ज़िन्दगियां भी अह़कामे ख़ुदा व रसूल पर अ़मल करने से मीनारए नूर बन जाएं। जैसा कि **पर्दे के बारे में सुवाल जवाब** सफ़ह़ा 214 पर है : एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमते सरापा ग़ैरत में उन के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ाज़िर हुईं, उन्हों ने बारीक दूपट्टा ओढ़ रखा था, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस दूपट्टे को फाड़ दिया और उन्हें मोटा दूपट्टा ओढ़ा दिया।[2] मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, क़ब्रों की ज़ियारत, तीसरी फ़स्ल, 2 / 527

2 .....موطا امام مالك، كتاب اللباس، باب ما يكره للنساء... الخ، ص ٤٨٥، حديث: ١٧٣٩

www.dawateislami.net

उस दूपट्टे को फाड़ कर दो रूमाल बना दिये ताकि ओढ़ने के क़ाबिल न रहे, रूमाल के काम आवे, लिहाज़ा इस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि आप ने येह माल ज़ाएअ़ क्यूं फ़रमा दिया ? मज़ीद फ़रमाते हैं : येह है अ़मली तब्लीग़ और बच्चियों की सहीह़ तरबिय्यत व ता'लीम उस दूपट्टे से सर के बाल चमक रहे थे, सित्र ह़ासिल न था इस लिये येह अ़मल फ़रमाया ।[1]

पर्दे के बारे में क़ुरआनो सुन्नत से माख़ूज़ मदनी फूल और बे पर्दगी की तबाहकारियां

पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल

- ☞ पर्दा करने में अह़कामे ख़ुदा व रसूल की इत़ाअ़त है ।
- ☞ पर्दा दिलों की त़हारत का सबब है ।
- ☞ पर्दा इ़फ़्फ़त व पाक दामनी की निशानी है ।
- ☞ पर्दा ईमान की अ़लामत है ।
- ☞ पर्दा अ़लामते ह़या है ।
- ☞ पर्दा मुह़ाफ़िज़े ह़या है ।
- ☞ पर्दा मूजिबे सित्र है ।
- ☞ पर्दा ग़ैरत का तक़ाज़ा है ।

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, लिबास का बयान, तीसरी फ़स्ल, 6 / 124

www.dawateislami.net

बे पर्दगी की तबाहकारियां

❀☞ बे पर्दगी अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की नाफ़रमानी है।

❀☞ बे पर्दगी हलाकत ख़ैज़ गुनाहे कबीरा है।

❀☞ बे पर्दगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दूरी और ला'नत का सबब है।

❀☞ बे पर्दगी जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

❀☞ बे पर्दगी बरोज़े क़ियामत अन्धेरे का बाइ़स है।

❀☞ बे पर्दगी निफ़ाक़ की अ़लामत है।

❀☞ बे पर्दगी एक बुरा काम है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं।

❀☞ बे पर्दगी मुआ़शरे में फ़ह़्ह़ाशी के फैलाव का ज़रीआ़ है।

❀☞ बे पर्दगी रुस्वाई का बाइ़स बनती है।

❀☞ बे पर्दगी शैत़ानी काम है।

❀☞ बे पर्दगी ग़ैर मुसलमानों की साज़िश है।

❀☞ बे पर्दगी ज़मानए जाहिलिय्यत की याद ताज़ा करती है।

❀☞ बे पर्दगी फ़ित़रत के बर अ़क्स है।

❀☞ बे पर्दगी में इन्सानी तहज़ीब की तज़लील व तनज़्ज़ुली है।

❀☞ बे पर्दगी बे शुमार बुराइयों की अस्ल है।

www.dawateislami.net

❁ ☞ बे पर्दगी ह़या व ग़ैरत के ख़ातिमे का सबब है।

❁ ☞ बे पर्दगी नौजवान नस्ल की तबाही का बहुत बड़ा ज़रीआ़ है।

❁ ☞ बे पर्दगी बसा औक़ात ख़ानदानों में फूट का बाइ़स बन जाती है।

❁ ☞ बे पर्दगी आंखों के ज़िना को फ़रोग़ देने में कलीदी किरदार अदा करती है।

पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ अमीरे अह्ले सुन्नत की मुख़्तलिफ़ कुतुब से माख़ूज़ चन्द मदनी फूल

❁ ☞ अफ़्सोस ! मौजूदा दौर में भी ज़मानए जाहिलिय्यत वाली बे पर्दगी पाई जा रही है। यक़ीनन जैसे उस ज़माने में पर्दा ज़रूरी था वैसा ही अब भी है।[1]

❁ ☞ इस गए गुज़रे दौर में जिस में पर्दे का तसव्वुर ही मिटता जा रहा है, मर्द व औ़रत की आपसी बे तकल्लुफ़ी और बद निगाही को مَعَاذَاللہ ऐ़ब ही नहीं समझा जा रहा ऐसे ना मुसाइ़द ह़ालात में हर ह़यादार व पर्दादार इस्लामी बहन समझ सकती है कि उस को कितनी मोह़तात़ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये।[2]

❁ ☞ अब तो ह़ालात दिन ब दिन बिगड़ते जा रहे हैं, शरई पर्दे का तसव्वुर

1 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 3

2 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 103

www.dawateislami.net

ही ख़त्म होता जा रहा है सच पूछो तो ह़ालत ऐसी है कि मुबालग़े के साथ अ़र्ज़ करूं तो इस नाज़ुक तरीन दौर में औ़रत को हज़ार पर्दों में छुपा दिया जाए तब भी कम है ![1]

❁☞ मुसलमानों की तरक़्क़ी में पर्दा नहीं दर ह़क़ीक़त बे पर्दगी रुकावट है ।[2]

❁☞ जो जिस्म के पर्दे का मुत़्लक़न इन्कार करे और कहे कि सिर्फ़ दिल का पर्दा होना चाहिये, उस का ईमान जाता रहा ।[3]

❁☞ पर्दा वोही करेगी जिस का दिल अच्छा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की त़रफ़ माइल होगा ।[4]

❁☞ अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! जवान लड़की अब चादर और चार दीवारी से निकल कर मख़्लूत़ ता'लीम की नुहूसत में गिरिफ़्तार, बोय फ़्रेन्ड के चक्कर में फंस गई, उसे जब तक चादर और चार दीवारी में रहने की सआ़दत ह़ासिल थी वोह शर्मीली थी और अब भी जो चादर व चार दीवारी में होगी वोह اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बा ह़या ही होगी ।[5]

1 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 106

2 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 152

3 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 194

4 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 195

5 .....बा ह़या नौजवान, स. 16

www.dawateislami.net

❁ ☞ अफ़्सोस ! हालात बिल्कुल बदल चुके हैं, अब तो अक्सर कंवारी लड़कियां शादियों में ख़ूब नाचतीं और मेहंदी व माइयों की रस्मों वग़ैरा में बे बाकाना बे ह़याई के मुज़ाहरे करती हैं, बा'ज़ क़ौमों में येह भी रवाज है कि दूल्हा निकाह़ के बा'द रुख़्सती से क़ब्ल ना मह़रमात कि जिन से पर्दा ज़रूरी है उन जवान लड़कियों के झुरमट में जाता है और वोह दूल्हा के साथ खींचा तानी व हंसी मज़ाक़ करती हैं येह सरासर नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।[1]

❁ ☞ आज की फ़ेशनेबल व बे पर्दा लड़कियां अफ़्आ़ल व अक़्वाल हर लिहाज़ से चादरे ह़या को तार तार कर रही हैं ।[2]

❁ ☞ मुआ़शरे का अक्सर हिस्सा ह़या से मह़रूम है ! तक़रीबन हर घर में टी वी पर फ़िल्मों ड्रामों के बाइस बे पर्दगी और बे ह़याई का माह़ोल है । दुन्यवी रसाइल, डाइजेस्ट और नाविलें पढ़ पढ़ कर, अख़्बारात में दुन्या भर की गन्दी गन्दी ख़बरें और मुख़र्रिबे अख़्लाक़ मज़ामीन का मुत़ालआ़ कर कर के और सड़कों पर जा बजा लगे हुवे साइन बोर्डज़ और अख़्बारात की बेह़याई से भरपूर तसावीर देख देख कर ज़ेह्निय्यत ख़राब से ख़राब तर होती जा रही है शायद इन्हीं वुजूहात की बिना पर

1 .....बा ह़या नौजवान, स. 17

2 .....बा ह़या नौजवान, स. 17

www.dawateislami.net

अब मामूंज़ाद, ख़ालाज़ाद, चचाज़ाद, फूफीज़ाद, चची, ताई मुमानी नीज़ पड़ोसनों से पर्दे का ज़ेहन नहीं रहा।[1]

❁ ☞ ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद, चचाज़ाद, तायाज़ाद, देवर व जेठ, ख़ालू, फूफा, बहनोई बल्कि अपने ना महरम पीरो मुर्शिद से भी पर्दा कीजिये। नीज़ मर्द का भी अपनी मुमानी, चची, ताई, भाभी और अपनी ज़ौजा की बहन वग़ैरा रिश्तेदारों से पर्दा है। मुंह बोले भाई बहन, मुंह बोले मां बेटे और मुंह बोले बाप बेटी में भी पर्दा है हत्ता कि ले पालक बच्चा (जब मर्द व औरत के मुआमलात समझने लगे तो) उस से भी पर्दा है अलबत्ता दूध के रिश्तों में पर्दा नहीं मसलन रज़ाई मां-बेटे और रज़ाई भाई-बहन में पर्दा नहीं।[2]

❁ ☞ अगर एक घर में रहते हुवे औरत के लिये क़रीबी ना महरम रिश्तेदारों से पर्दा दुश्वार हो तो चेहरा खोलने की तो इजाज़त है मगर कपड़े हरगिज़ ऐसे बारीक न हों जिन से बदन या सर के बाल वग़ैरा चमकें या ऐसे चुस्त न हों कि बदन के आ'ज़ा जिस्म की हैअत (या'नी सूरत व गोलाई) और सीने का उभार वग़ैरा ज़ाहिर हो।[3]

[1].....बा हया नौजवान, स. 48

[2].....करबला का ख़ूनी मन्ज़र, स. 33

[3].....ग़फ़लत, स. 13

www.dawateislami.net

❁ ☞ मुसलमान औ़रत का काफ़िरा से उसी त़रह़ पर्दा है जिस त़रह़ अजनबी मर्द से । काफ़िरा के लिये औ़रत के बदन के वोह तमाम ह़िस्से सित्र हैं जो कि एक अजनबी मर्द के लिये हैं ।(1)

❁ ☞ अफ़्सोस ! आज कल "ख़ुदकुशी" कुछ ज़ियादा ही आ़म हो गई है, इस का एक बहुत बड़ा सबब इ़ल्मे दीन से दूरी है, दाढ़ी मुन्डों, या जज़्बाती मॉडर्न बे रीश लड़कों, स्कूल व कॉलेज के त़ालिबे इ़ल्मों, दुन्यवी ता'लीम याफ़्तों या बे पर्दा व फ़ेशनेबल औ़रतों में ही ख़ुदकुशी का मैलान देखा जा रहा है । आप ने कभी नहीं सुना होगा कि फ़ुलां दीनी त़ालिबे इ़ल्म या आ़लिमे दीन या मुफ़्ती साह़िब या शरीअ़त की पाबन्द पर्दा नशीन नेक बीबी ने ख़ुदकुशी कर ली ।(2)

❁ ☞ पर्दा करने में जितनी तक्लीफ़ ज़ियादा होगी उतना ही सवाब भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा मिलेगा ।(3)

❁ ☞ बा ह़या इस्लामी बहनें अपने घरों के अन्दर पर्दा नशीन होती हैं क्यूंकि गलियों, बाज़ारों में बे पर्दा फिरना बे ह़या औ़रतों का काम है ।(4)

1 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 26
2 .....नेकी की दा'वत, स. 506
3 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 198
4 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, 1 / 1248

www.dawateislami.net

❁ ☞ शॉपिंग सेन्टरों में आज कल अक्सर बे ह़याई से लबरेज़ गुनाहों भरा माह़ोल होता है और औ़रत सिन्फ़े नाज़ुक है उसे वहां से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है।[1]

❁ ☞ चराग़ां देखने के लिये औ़रतों का अजनबी मर्दों में बे पर्दा निकलना ह़राम व शर्मनाक नीज़ बा पर्दा औ़रतों का भी मुरव्वजा अन्दाज़ में मर्दों में इख़्तिलात़ (या'नी ख़ल्त़ मल्त़ होना) इन्तिहाई अफ़्सोस नाक है।[2]

❁ ☞ इस्लामी बहनों से मदनी इल्तिजा है कि किसी को भी ढीला ढाला भद्दे रंग का बिल्कुल बे कशिश ख़ैमानुमा ह़क़ीक़ी मदनी बुर्क़अ़ पहनने पर मजबूर न करें कि कई घरों में सख़्तियां बहुत ज़ियादा हैं, शरीअ़त व सुन्नत के अह़कामात पर अ़मल करने वालों और वालियों के साथ आज कल मुआ़शरे में अक्सर बे ह़द ना रवा सुलूक किया जाता है।[3]

❁ ☞ बेशक कितनी ही पुरानी इस्लामी बहन हो और वोह कैसा ही ख़ूब सूरत बुर्क़अ़ पहने या मेक-अप करे उस पर त़न्ज़ कर के उस की दिल आज़ारी न करें कि बिला मस्लह़ते शरई मुसलमान का दिल दुखाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[4]

1 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 219
2 .....सुब्ह़े बहारां, स. 23
3 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 275
4 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 275

www.dawateislami.net

❁ ☞ जब तक घर के अन्दर दाख़िल न हो जाएं उस वक़्त तक बुर्क़अ़ तो बुर्क़अ़ चेहरे से निक़ाब भी न हटाएं कि गली और बिल्डिंग की सीढ़ियों वग़ैरा पर भी ना महरम अफ़राद हो सकते हैं और उन से पर्दा करना ज़रूरी है।[1]

❁ ☞ इस्लामी बहन के जो बाल कंघी वग़ैरा के ज़रीए़ जुदा हों उन को छुपा दे या दफ़्न कर दे।[2]

❁ ☞ जिस के घर में ना महरम साथ रहते हों या मेहमानों की आमदो रफ़्त हो उन इस्लामी बहनों को ह़म्माम वग़ैरा से अपने बाल चुन लेने में ज़ियादा एह़तियात़ करनी चाहिये। नीज़ जब भी ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हों साबुन पर चिपके हुवे बाल भी निकाल लिया करें।[3]

❁ ☞ इस्लामी बहन का अपने कपड़े की सिलाई के लिये ना महरम दरज़ी को अपने बदन के ज़रीए़ नाप देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[4]

❁ ☞ इस्लामी बहन बात बात पर घर से बाहर न दौड़ती फिरे। सिर्फ़ शरई मस्लह़त की सूरत में पर्दे की तमाम कुयूदात के साथ बाहर निकले।[5]

1 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 276
2 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 278
3 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 279
4 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 283
5 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 283

www.dawateislami.net

❁ ☞ इस्लामी बहन का हिजड़े (खुसरे) से भी पर्दा है क्यूंकि हिजड़ा या'नी मुख़न्नस भी मर्द ही के हुक्म में है।[1]

❁ ☞ शरई पर्दे के तअ़ल्लुक़ से इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। दा'वते इस्लामी का मदनी काम भी करती रहिये और सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों की मुसाफ़िरा बनने की सआ़दत भी ह़ासिल फ़रमाती रहिये।[2]

❁ ☞ इस्लामी बहनों के मदनी क़ाफ़िले की हर मुसाफ़िरा के साथ उस के बच्चों के अब्बू या क़ाबिले ए'तिमाद मह़रम का साथ होना लाज़िमी है, नीज़ ज़िम्मेदारान को अपनी मर्ज़ी से मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने की इजाज़त नहीं मसलन पाकिस्तान की इस्लामी बहनों के मदनी क़ाफ़िले के लिये "इस्लामी बहनों की मजलिस बराए पाकिस्तान" की मन्ज़ूरी ज़रूरी है।[3]

❁ ☞ शरई इजाज़त की सूरत में घर से निकलते वक़्त इस्लामी बहन ग़ैर जाज़िबे नज़र कपड़े का ढीला ढाला मदनी बुर्क़अ़ ओढ़े, हाथों में दस्ताने

1.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 287
2.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 10
3.....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, ह़ाशिया, स. 11

www.dawateislami.net

और पाउं में जुर्राबें पहने । मगर दस्तानों और जुर्राबों का कपड़ा इतना बारीक न हो कि खाल की रंगत झलके ।[1]

❀ ☞ चाहे कितनी ही सख़्त आज़माइश आन पड़े शरई पर्दा तर्क न कीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शहज़ादिये कौनैन, बीबी फ़ातिमा और उम्मुल मोमिनीन बीबी आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के सदक़े आसानी फ़रमा देगा ।[2]

❀ ☞ मौत या त़लाक़ की इद्दत के दौरान इस्लामी बहन सुन्नतें सीखने या सिखाने के लिये घर से बाहर नहीं जा सकती ।[3]

❀ ☞ ना महरम पीर और मुरीदनी का भी पर्दा है । मुरीदनी अपने ना महरम पीर का हाथ नहीं चूम सकती ।[4] कि येह ह़राम है, पीर न रोके तो वोह भी गुनहगार है ।[5]

❀ ☞ इस्लामी बहन के लिये बेहतर येही है कि घर के किसी महरम के ज़रीए क़ुरआन सीखे वरना ब अम्रे मजबूरी किसी इस्लामी बहन से सीखने के लिये इस त़रह़ बाहर निकले कि पर्दे के तमाम शरई तक़ाज़े पूरे हों ।[6]

1 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 42
2 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 179
3 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 274
4 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 328
5 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 84
6 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 86

www.dawateislami.net

❁ ☞ औरत रमज़ानुल मुबारक में अपने शौहर या क़ाबिले इत्मीनान महरम के साथ उमरह कर सकती है मगर उमरह चूंकि फ़र्ज़ या वाजिब नहीं अगर औरत इस के लिये न निकले तो किसी क़िस्म का गुनाह भी नहीं।[1]

चन्द आदाबे ह़यात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सह़ाबियात की ज़िन्दगियां वाक़ेई हमारे लिये मीनारए नूर की हैसिय्यत रखती हैं, लिहाज़ा हमारे लिये ज़िन्दगी को शरीअ़त के सुनह्रे उसूलों के मुत़ाबिक़ गुज़ारने की कोशिश करने में सह़ाबियात की ज़िन्दगियों से माख़ूज़ वोह मदनी फूल इन्तिहाई अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने नक़्ल फ़रमाए हैं। चुनान्चे, आप फ़रमाते हैं :

❁ ☞ औरत को चाहिये कि हमेशा अपने घर की चार दीवारी में गोशा नशीन रहे।

❁ ☞ (बिला ज़रूरत) छत पर बार बार न चढ़े।

❁ ☞ अपनी गुफ़्तगू पर पड़ोसियों को आगाह न करे। (या'नी इतनी आवाज़ में गुफ़्तगू करे कि उस की आवाज़ चार दीवारी से बाहर न जाए)

❁ ☞ बिला ज़रूरत पड़ोसियों के पास आया जाया न करे।

❁ ☞ जब उस का शौहर उस की त़रफ़ देखे तो उसे ख़ुश करे।

❁ ☞ शौहर की ग़ैर मौजूदगी में उस की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे।

❁ ☞ घर से न निकले, (ज़रूरतन) अगर किसी काम से निकलना पड़े तो बा पर्दा हो कर निकले।

1 .....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 100

www.dawateislami.net

❁ ☞ अपनी गुर्बत वग़ैरा को छुपाए बल्कि जो उसे जानता हो उस के सामने अपनी ग़ुर्बत का इज़्हार न करे ।

❁ ☞ इस्लाहे़ नफ़्स और घरेलू मुआ़मलात की दुरुस्ती में इन्तिहाई कोशिश करे ।

❁ ☞ नमाज़-रोज़े की पाबन्दी करे ।

❁ ☞ अपने उ़यूब पर नज़र रखे ।

❁ ☞ दीनी मुआ़मले में ख़ूब ग़ौरो तफ़क्कुर करे ।

❁ ☞ ख़ामोशी की आ़दत बनाए ।

❁ ☞ निगाहें नीची रखे ।

❁ ☞ अपने दिल में रब्बे जब्बार का ख़ौफ़ पैदा करे ।

❁ ☞ कसरत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे ।

❁ ☞ अपने शौहर की फ़रमां बरदार रहे ।

❁ ☞ शौहर को रिज़्क़े ह़लाल कमाने की तरग़ीब दिलाए ।

❁ ☞ शौहर से तह़ाइफ़ वग़ैरा की ज़ियादा फ़रमाइश न करे ।

❁ ☞ शर्मो ह़या को लाज़िम पकड़े ।

❁ ☞ बद ज़बानी व फ़ोह़्श कलामी न करे ।

❁ ☞ सब्रो शुक्र का दामन कभी न छोड़े ।

❁ ☞ अपने नफ़्स के मुआ़मले में ईसार करे ।

❁ ☞ अपनी ह़ालत और ख़ूराक के मुआ़मले में ख़ुद को तसल्ली दे ।

❁ ☞ जब शौहर का दोस्त घर में आने की इजाज़त चाहे और शौहर घर में मौजूद न हो तो उसे घर में आने की इजाज़त न दे और अपने नफ़्स और शौहर से ग़ैरत करते हुवे उस से कसरते कलाम न करे ।[(1)]

[1] ......مجموعه رسائلِ امام غزالی، رسالہ ادب فی الدین، آداب المرأة فی نفسها، ص ٤٤٢

www.dawateislami.net

बे पर्दगी से नफ़रत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये मदनी माहोल ज़रूरी है, वरना आ़रिज़ी तौ़र पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोह़बत के फ़ुक़्दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती । अपना मदनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये । سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त और मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और बरकतें हैं ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे माहोल में रचने बसने की बरकत से मुतअ़द्दिद इस्लामी बहनों को शरई पर्दा करने की सआ़दत नसीब हो गई ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये । चुनान्चे,

बाबुल मदीना (कराची) शेर शाह आ़लमगीर रोड़ की एक इस्लामी बहन मदनी माहोल की बरकतों का ज़िक्र करते हुवे कुछ यूं बयान करती हैं : दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माहोल से मुन्सलिक होने से क़ब्ल अफ़्सोस ! जहां मैं फ़िक्रे आख़िरत से ना बलद थी वहीं मक़्सदे ह़यात से बे ख़बर ज़िन्दगी की अनमोल सांसें बरबाद कर रही थी । वोह वालिदैन जिन की ख़िदमत सरापा बरकत में दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़रूई पोशीदा है जब मुझे किसी बात का हुक्म देते तो अ़मल कर के अज्रो सवाब की ह़क़्दार बनने के बजाए हुक्म उ़दूली कर के नारे जहन्नम का सामान करती ।

www.dawateislami.net

शैत़ान बद बख़्त हर लम्हे ईमान को बरबाद करने के हथकन्डे अपनाता और गुनाहों पर उक्साता है और उन की रग़बत दिला कर आख़िरत बरबाद करना चाहता है, मगर हाए अफ़्सोस ! मैं उस के मक्रो फ़रेब से बच कर कुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के बजाए ख़ूब बाल संवार कर गले में दूपट्टा डाल लेती, यूं बे पर्दगी के बाइस ना महरम लोगों के सामने आ कर जहां खुद गुनाहे कबीरा में मुब्तला होती वहीं दीगर को भी बद निगाही के वबाल का शिकार करती। मैं इस बे पर्दगी वाली आ़दत पर बहुत खुश थी, मगर ज़िन्दगी की इन ख़रमस्तियों में येह भूल चुकी थी कि येह गुनाह मुझे आख़िरत में बरबाद कर सकता है। फिर अचानक मेरी ज़िन्दगी में एक इन्क़िलाब बरपा हुवा और मैं इस गुनाह की तबाहकारियों के बारे में न सिर्फ़ ब ख़ूबी जान गई बल्कि बे पर्दगी के इ़फ़रीत से भी मुझे हमेशा के लिये नजात मिल गई। इस की सूरत कुछ यूं बनी कि खुश क़िस्मती से एक बार मुझे तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जाने का मौक़अ़ मिल गया, वहां ह़या से मा'मूर मदनी माह़ोल देख कर बहुत अच्छा लगा, मज़ीद सुन्नतों भरा बयान और दुआ़ सुन कर मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, दौराने दुआ़ बे पर्दगी और दीगर गुनाहों से तौबा की और सुन्नतों पर अ़मल करने के जज़्बे के तह़त मदनी माह़ोल इख़्तियार करने का फ़ैसला कर लिया। जल्द ही मदनी बुर्क़अ़ मेरे लिबास का हिस्सा बन गया और मैं आख़िरत संवारने, क़ब्र रौशन करने और शफ़ाअ़ते रसूल की ह़क़दार बनने के लिये राहे हिदायत पर गामज़न हो गई, मज़ीद नफ़्सो शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचने के लिये पन्दरहवीं सदी की

www.dawateislami.net

अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या अ़त्तारिया में दाख़िल हो गई, एक वलिये कामिल का दामन क्या थामा इ़ल्मे दीन का शौक़ दिल में पैदा हो गया और मैं अपने दिल को नूरे क़ुरआन से मुनव्वर करने के लिये मुअ़ल्लिमा कोर्स में शामिल हो गई, ता दमे तह़रीर मुअ़ल्लिमा कोर्स करने के बा'द मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) में मदनी मुन्नियों को कलामे इलाही पढ़ाने के साथ साथ ज़ैली सत्ह़ पर ख़ादिमा की ह़ैसिय्यत से क़ब्रो आख़िरत को संवारने की कोशिश में मसरूफ़ हूं।

कटी है ग़फ़्लतों में ज़िन्दगानी — न जाने ह़श्र में क्या फ़ैसला हो

इलाही हूं बहुत कमज़ोर बन्दी — न दुन्या में न उ़क़्बा में सज़ा हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

इस्लामी बहनों के मदनी काम के 41 मदनी फूलों में से 32 वां मदनी फूल

तमाम इस्लामी बहनों को ख़ास ताकीद है कि ऐसा कोई काम न करें जिस से हमारी प्यारी मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी को किसी क़िस्म का नुक़्सान पहुंचे। मसलन रिश्ता करवाना, शादी बियाह, त़लाक़, लड़ाई झगड़े या घरेलू मुआ़मलात में दख़्ल अन्दाज़ी, किसी से क़र्ज़ या सुवाल करना व ज़ाती दोस्तियों, ग्रुप बन्दियों, मख़्सूस दा'वतों, क़ीमती तह़ाइफ़ के तबादलों से इजतिनाब, इजतिनाब और ज़रूर इजतिनाब फ़रमाती रहें। (तोह़फ़ा या रिश्वत के बारे में फ़ैज़ाने सुन्नत तख़रीज शुदा स. 53 का मुत़ालआ़ फ़रमाएं)

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

	قرآن مجید	کلام باری تعالی	
نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
.1	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ
.2	تفسیر بیضاوی	ناصر الدین عبد اللہ بن عمر بن محمد شیرازی، متوفی ۶۸۵ھ	دار احیاء التراث العربی
.3	الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۳۲ھ
.4	موطا امام مالک	امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۳ھ
.5	المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
.6	صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
.7	صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
.8	سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
.9	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
.10	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
.11	کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
.12	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار السلام الریاض ۱۴۲۱ھ

www.dawateislami.net

.13	مراۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
.14	الدر المختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
.15	فتاوی ھندیہ	علامہ ھمام مولانا شیخ نظام وجماعۃ من علماء الھند، متوفی ۱۱۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
.16	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۸ھ
.17	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاھور
.18	بھار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
.19	وقار الفتاوی	مولانا مفتی محمد وقار الدین، متوفی ۱۴۱۳ھ	بزم وقار الدین کراچی 2001ء
.20	مجموعۃ رسائل امام غزالی	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	المکتبۃ التوفیقیۃ القاھرۃ مصر
.21	سیرت سید الانبیا	شیخ کبیر مولانا محمد ھاشم ٹھٹھوی، متوفی ۱۱۷۴ھ	مظھر علم کالا خطائی روڈ شاھدرہ لاھور ۱۴۲۱ھ
.22	مدارج النبوۃ	شیخ محقق عبد الحق محدث دھلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	النوریۃ الرضویۃ لاھور
.23	اخبار الاخیار	شیخ محقق عبد الحق محدث دھلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	النوریۃ الرضویۃ لاھور
.24	الطبقات الکبری	محمد بن سعد بن منیع ھاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۱ھ

www.dawateislami.net

.25	صفة الصفوة	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۷ھ
.26	کتاب التعریفات	سید شریف علی بن محمد بن علی جرجانی، توفی ۸۱۶ھ	دار النفائس بیروت ۱۴۲۸ھ
.27	اسلامی زندگی	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبة المدینه، باب المدینه کراچی
.28	پردے کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	//
.29	غیبت کی تباہ کاریاں	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	//
.30	فیضانِ سنت جلد اول	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	//
.31	باحیا نوجوان	//	//
.32	کربلا کا خونی منظر	//	//
.33	صبح بہاراں	//	//
.34	غفلت	//	//
.35	نیکی کی دعوت	//	//
.36	حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	//

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सित्रे औ़रत क्या है ?	23
शर्मो ह़या की पैकर बा पर्दा सह़ाबिया का सफ़रे मदीना	1	पर्दा मगर किन से ?	25
		पर्दादार के लिये आज़माइश	27
ह़ालते सफ़र में पर्दा	4	मरज़ या किसी मुसीबत में पर्दे का एहतिमाम करना कैसा ?	28
क्या औ़रत का तन्हा सफ़र करना जाइज़ है ?	5	बेटा खोया है, ह़या नहीं	30
पर्दा व ह़िजाब क्या है ?	6	ह़ालते मरज़ में बे पर्दा हो जाने की फ़िक्र	30
औ़रत किसे कहते हैं ?	7	पर्दे में एह़तियात़ की मिसालें	31
पर्दे का हुक्म कब नाज़िल हुवा ?	8	ह़ालते एह़राम में भी पर्दा	32
पर्दा सिर्फ़ औ़रतों के लिये ही क्यूं ?	9	जहाने फ़ानी से कूच कर जाने वालों से पर्दा	34
क्या औ़रतों का घरों में रहना ज़ुल्म है ?	10	शर्हे ह़दीस	34
पर्दा व ह़िजाब गोया इस्लामी शिआ़र है	11	फ़रोग़ व ह़िफ़ाज़ते ह़िजाब में सह़ाबियात का किरदार	36
अ़ह्दे रिसालत में ह़िजाब	12		
पर्दा व ह़िजाब के दरजात	13	पर्दे के बारे में क़ुरआनो सुन्नत से माख़ूज़ मदनी फूल और बे पर्दगी की तबाहकारियां	37
पहला दर्जा	13		
घर से जनाज़ा ही निकला	14	पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल	37
जनाज़े पर किसी ग़ैर की नज़र न पड़े	15	बे पर्दगी की तबाहकारियां	38
क्या पर्दे के पहले दर्जे पर अ़मल सह़ाबियात ही का काम था ?	15	पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ अमीरे अह्ले सुन्नत की मुख़्तलिफ़ कुतुब से माख़ूज़ चन्द मदनी फूल	39
दूसरा दर्जा	17		
सह़ाबियात का ह़िजाब कैसा था ?	17	चन्द आदाबे ह़यात	48
घर से बाहर निकलने की एह़तियातें	18	बे पर्दगी से नफ़रत	50
ख़्वाह म ख़्वाह की उ़ज़्र ख़्वाही से बचिये	20	माख़ज़ो मराजेअ़	53
		फ़ेहरिस्त	56
तीसरा दर्जा	22	याददाश्त	57

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133008

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net